PRINCE SCHOOL
विद्याऽमृतमश्नुते
PRINCE SCHOOL
Rajasthan Board, English & Hindi Medium, Class IV to XII (Science, Commerce, Arts & Agriculture)
www.princeeduhub.com | Palwas Road, Sikar. Helpline : 9610-69-2222 | princeeducationhubsikar

Model Paper - III - 2024-25

Class - XII

Time : 3:15 Hours **Subject : Hindi Literature** **M.M. : 80**

GENERAL INSTRUCTIONS TO THE EXAMINEES:
परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश:-

- ***Candidate must write first his/her Roll No. on the question paper compulsory.***
  परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।
- ***All the questions are compulsory.***
  सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
- ***Write the answer to each question in the given answer-book only.***
  प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
- ***For questions having more than one part, the answers to those parts are to be written together in continuity.***
  जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड है, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
- ***Write down the serial number of the question before attempting it.***
  प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-अ

01. निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए -

(i) 'तोड़ो' कविता की शैली कैसी है ? 1
(1) आत्मपरक (2) समूहपरक
(3) उद्‌बोधनपरक (4) रोमांचक

(ii) निम्न में से कौन सूफी प्रेममार्गी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं ? 1
(1) घनानंद (2) जायसी
(3) विद्यापति (4) नूर मुहम्मद

(iii) विद्यापति ने कौनसी भाषा में रचनाकर्म नहीं किया ? 1
(1) संस्कृत (2) हिन्दी
(3) अवहट्‌ट (4) मैथिली

(iv) भीष्म साहनी का उपन्यास नहीं है ? 1
(1) भाग्यरेखा (2) तमस (3) बसंती (4) कुंतो

(v) 'किसान ने किसके साथ साझे की खेती नहीं की थी ? 1
(1) शेर (2) चीता
(3) बघेरा (4) मगरमच्छ

(vi) संभव के नन्हे दोस्त और पारो के भतीजे का क्या नाम था ? 1
(1) मुन्नू (2) चुन्नू
(3) मनु (4) मन्नू

(vii) भैंरों को उकसाने और भड़काने में किसकी भूमिका रही ? 1
(1) सूरदास (2) सुभागी
(3) जगधंर (4) नायकराम

(viii) सूरदास के पास किस धातु के सिक्के थे ? 1
(1) सोना (2) चाँदी (3) पीतल (4) लोहा

(ix) 'मछलियाँ कभी-कभी उबस के माँजा लगने से भी मर जाती है।' यहाँ प्रयुक्त 'माँजा' शब्द का क्या अर्थ है ? 1

(1) पानी (2) चाँदी

(3) पीतल (4) लोहा

(x) लेखक विश्वनाथ ने अपने जीवन में माँ, गाँव और आसपास के प्राकृतिक परिवेश का वर्णन करते हुए किसका वर्णन नहीं किया ? 1

(1) ग्रामीण जीवन शैली (2) लोक कला

(3) लोक कथा (4) लोक मान्यता

(xi) प्रभाष जोशी के लेखों का संग्रह है ? 1

(1) काले कागद (2) कागद कारे

(3) जनसत्ता (4) जीवन के पन्ने

(xii) नाटक की मूल विशेषता क्या है ? 1

(1) शब्द (2) सबटैक्स्ट

(3) समय का बंधन (4) कथ्य

(xiii) कहानी का केंद्रीय बिंदु होता है ? 1

(1) पात्र (2) संवाद

(3) उद्देश्य (4) कथानक

(xiv) विशेष रिपोर्ट का प्रकार नहीं है ? 1

(1) खोजी रिपोर्ट (2) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट

(3) व्याख्यात्मक रिपोर्ट (4) विवरणात्मक रिपोर्ट

(xv) खेलो से संबंधित विशेष लेखक नहीं है ? 1

(1) हर्ष भोगले (2) रणवीर सिंह

(3) जसदेवसिंह (4) नरोत्तम पुरी

02. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए - $1 \times 6 = 6$

(i) रस के नित्य धर्म ही ..... कहलाते हैं।

(ii) जब काव्य में ग्रामीण शब्दों या गँवार शब्दों का प्रयोग होता, वहाँ ..... दोष होता है।

(iii) छंद को काव्य - पुरूष के ..... कहा जाता है।

(iv) द्रुतविलम्बित छंद में ..... वर्ण होते है।

(v) अलंकार काव्य के ..... धर्म होते हैं।

(vi) जिस अलंकार में प्रस्तुत वर्णन के साथ अप्रस्तुत वर्णन का भी बोध हो, वहाँ ..... अलंकार होता है।

03. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए । $1 \times 6 = 6$

क्षणभंगुर जीवन है, यह सत्य है। इसके तुम तीन अर्थ ले सकते हो। एक, क्षणभंगुर है, इसलिए जल्दी करो। भोगो, कहीं भोग छूट न जाए। सांसारिक आदमी, वही कहता है - खाओ, पीओ, मौज करो, जिंदगी जा रही है। फिर धार्मिक आदमी है, वह कहता है - जिंदगी जा रही है, खाओ, पीओ, मौज करो, इसमें समय मत गंवाओं। कुछ कमाई कर लो, जो आगे काम आए स्वर्ग में, मोक्ष में। ये दोनों गलत हैं। फिर एक तीसरा आदमी है जिसको मैं जागा हुआ पुरूष करता है, बुद्धपुरूष कहता हूँ, वह कहता है - जीवन क्षणभंगुर है, इसलिए कल पर तो कुछ भी नहीं छोड़ा जा सकता। स्वर्ग और भविष्य की कल्पनाएँ नासमझियाँ हैं। इसलिए बुद्ध ने स्वर्गों की बात नहीं की। फिर वह यह कहता है कि जीवन क्षणभंगुर है तो सतह पर ही खाने पीने और मौज में भी उसे गंवाना व्यर्थ है। तो थोड़ा हम भीतर उतरें, क्षण को खोलें, कौन जाने क्षण केवल द्वार हो जिसके बाहर ही हम जीवन को गंवाए दे रहे है । क्षण को खोलना ही ध्यान है।

(i) जीवन कैसा है व इसके कितने अर्थ हैं ?

(ii) सांसारिक आदमी जीवन को किस दृष्टिकोण से देखता है ?

(iii) धार्मिक आदमी के अनुसार जीवन कैसा है ?

(iv) कल पर कुछ भी क्यों नहीं छोड़ा जा सकता ?

(v) क्षण को कैसे खोला जा सकता है ?

(vi) इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

04. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए । $1 \times 6 = 6$

हे तात ! मित्र ! भ्राता ! बंधु !
हे सखी। प्रिया ! भगिनी! बाला!
किस चिंता ने तुझको घेरा,
किन बाधाओं का तुझ पर डेरा ।।
क्यों बैठे हाथ पर हाथ धरे। चल वक्त से दो-दो हाथ करें।

तू संभल-संभलकर क्यों चलता क्या मजा संभलकर चलने में ।।
आ गिरकर फिर उठना सीखें। आ उठकर फिर चलना सीखें ।।
गिरकर उठना - उठकर चलना । ये जीवन यही सिखाता है।।
फिर तू क्यों शोक मनाता है। ये वक्त न शोक मनाने का ।।
है विपदा से टकराने का, है खुद को फिर अजमाने का ।।

(i) इस कविता का उचित शीर्षक लिखिए।
(ii) कवि किसे संबोधित कर रहा है ?
(iii) जीवन हमें क्या सिखाता है ?
(iv) मनुष्य खुद को कैसे आजमाता है ?
(v) कवि कैसा दाव लगाने को कहता है ?
(vi) होश में आने से क्या होगा ?

खण्ड-ब

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए -

05. देवसेना जीवन के भावी सुख, आशा, आकांक्षा से विदा क्यों ले रही हैं ? 2
06. बनारस को मिथक बन चुका शहर क्यों कहा गया हैं ? 2
07. मजदूर आधी मजदूरी पर भी काम करने के लिए क्यों तैयार हो गए ? 2
08. लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी ने किसे सुखी व किसे दुखी कहा है ? 2
09. ''जिसने मेरी आबरू बिगाड़ दी, उसके साथ जो चाहे करूँ, मुझे पाप नहीं लग सकता ।'' यह कथन किसने कहा व क्यों कहा ? 2
10. 'सही मायनों में हम उजड़ रहे हैं।' प्रभाष जोशी ने यह क्यों कहा है ? 2
11. अन्योक्ति अलंकार किसे है ? सोदाहरण स्पष्ट करें । 2
12. कहानी लेखन में द्वन्द्व व उद्देश्य का क्या महत्व है ? 2
13. सफल साक्षात्कार के लिए साक्षात्कारकर्त्ता में कौन - कौन से गुण होने चाहिए ? 2
14. विशेष लेखन की भाषा - शैली कैसी होनी चाहिए। 2
15. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' अथवा 'निर्मल वर्मा में से किसी एक का साहित्यिक परिचय दीजिए। 2

खण्ड-स

निर्देश : - उत्तर लगभग 60-80 शब्दों में लिखिए -

16. निम्न पंक्तियों का काव्य सौंदर्य लिखें - 3

''बिनु समुझें निज अद्य परिपाकू। जारिउँ जायँ जननि कह काकू ।।
हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा। एकहि भाँति भलेंहि भल मोरा ।।
गुर गोसाइँ साहिब सिय रामू। लागत मोहि नीक परिनामू ।।

अथवा

निम्न पंक्तियों का काव्य सौंदर्य लिखें -

''धरनी धरि धनि कत बेरि बइसई, पुनि तहि उठइ न पारा।।
कातर दिढि करि, चौदिस हेरि - हेरि, नयन गरए जल - धारा ।।
तोहर बिरह दिन छन - छन तनु छिन चौदसि - चाँद - समान ।।
भनइ विद्यापति सिबसिंह नर - पति, लखिमादेइ - रमान ।।''

17. ''संवदिया' कहानी की गति, लय, प्रवाह, संवाद और संगीत, पढ़ने वाले के रोम-रोम को झंकृत कर देती है।' कथन के आलोक में संवदिया कहानी का मूल्यांकन करें। 3

अथवा

'दूसरा देवदास' कहानी अपने कथ्य, विषयवस्तु, भाषा और शिल्प की दृष्टि से बेजोड़ है।' कथन को स्पष्ट करें।

18. 'सूरदास की झोपड़ी' पाठ में सूरदास जैसे लाचार और बेबस व्यक्ति की जिजीविषा एवं उसके संघर्ष का अनूठा चित्रण हुआ है।' कथन पर प्रकाश डालिए । 3

अथवा

'गाँव शहर की तरह सुविधायुक्त नहीं होते, बल्कि प्रकृति पर अधिक निर्भर रहते हैं।' 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के आधार इस वाक्य का विवेचन कीजिए।

खण्ड - 'द'

19. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए - 1 + 4 = 5

अथवा

हम लोग उन्हें एक पुरानी चीज़ समझा करते थे। इस पुरातत्त्व की दृष्टि में प्रेम और कुतूहल का एक अद्‌भूत मिश्रण रहता था। यहाँ पर यह कह देना आवश्यक है कि चौधरी साहब एक खासे हिंदुस्तानी रईस थे। वसंत पंचमी, होली इत्यादि अवसरों पर उनके यहाँ खूब नाचरंग और उत्सव हुआ करते थे। उनकी हर एक अदा से रियासत और तबीयत दारी टपकती थी। कंधों तक बाल लटक रहे हैं। आप इधर से उधर टहल रहे हैं।

अथवा

अपने में सब और सबमें आप - इस प्रकार की एक समष्टि बुद्धि जब तक नहीं आती तब तक पूर्ण सुख का आनंद भी नहीं मिलता। अपने आपको दलित द्राक्षा की भाँति निचोड़कर जब तक 'सर्व' के लिए निछावर नहीं कर दिया जाता तब तक 'स्वार्थ' खंड-सत्य है, वह मोह को बढ़ावा देता है, तृष्णा को उत्पन्न करता है और मनुष्य को दयनीय-कृपण बना देता है। कार्पण्य दोष से जिसका स्वभाव उपहत हो गया है; उसकी दृष्टि म्लान हो जाती है। वह स्पष्ट नहीं देख पाता। वह स्वार्थ भी नहीं समझ पाता, परमार्थ तो दूर की बात है।

20. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए - 1 + 4 = 5

पूसे जाड़ थरथर तन काँपा। सुरूज जड़ाइ लंक दिसि तापा।।
बिरह बाढ़ि भा दारून सीऊ। कँपि कँपि मरौं लेहि हरि जीऊ।।
कंत कहाँ हौ' लागौं हियरै। पंथ अपार सूझ नहिं नियरें।।
सौर सुपेती आवै जूड़ी। जानहुँ सेज हिवंचल बूढ़ी।।
चकई निसि बिछुरैं दिन मिला। हौं निसि, बासर बिरह कोकिला
रैनि अकेलि साथ नहिं सखी। कैसें जिऔं बिछोही पँखी।।
बिरह सचान भँवै तन चाँड़ा। जीयत खाइ मुएँ नहिं छाँड़ा।।
रकत ढरा माँसू गरा, हाड़ भए सब संख।
धनि सारस होई ररिमुई, आइ समेटहु पंख।।

अथवा

अमु दिन अमुक बार मदन महीने की होवेगी पंचमी
दफ्तर में छुट्टी थी - यह था प्रमाण
और कविताएँ पढ़ते रहने से यह पता था
कि दहर-दहर दहकेंगे कहीं ढाक के जंगल
आम बौर आवेंगे
रंग - रस - गंध से लदे - फँसे दूर के विदेश के
वे नंदन - वन होवेंगे यशस्वी
मधुमस्त पिक भौर आदि अपना-अपना कृतित्व
अभ्यास करके दिखावेंगे
यही नहीं जाना था कि आज के नगण्य दिन जानूँगा
जैसे मैंने जाना, कि वसंत आया।

21. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 400 शब्दों में निबंध लिखिए - 6

(i) मन के हारे हार है, मन के जीते जीत
(ii) बालक का बचपन बचाओ
(iii) राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता और युवा
(iv) राजस्थान के लोकगीत व लोक संस्कृति